Journal of Advances and Scholarly Researches in Allied Education
Vol. 12, Issue No. 2, January-2017, ISSN 2230-7540

कमलेश्वर के उपन्यासों में नारी मनोविज्ञान

Narender Kumar[1]* Dr. Govind Dwivedi[2]

[1] Research Scholar of OPJS University, Churu, Rajasthan

[2] Associate Professor, OPJS University, Churu, Rajasthan

सार – कमलेश्वर ने अनेक हिंदी फिल्मों की पट-कथाएँ भी लिखी हैं। उन्होंने सारा आकाश, अमानुष, आँधी, सौतन की बेटी, लैला, व मौसम जैसी फ़िल्मों की पट-कथा के अतिरिक्त 'मि. नटवरलाल', 'द बर्निंग ट्रेन', 'राम बलराम' जैसी फ़िल्मों सहित अनेक हिंदी फ़िल्मों का लेखन किया।

दूरदर्शन (टी.वी.) धरावाहिकों में 'चंद्रकांता', 'युग', 'बेताल पचीसी', 'आकाश गंगा', 'रेत पर लिखे नाम' इत्यादि का लेखन किया।

कमलेश्वर की रचनाओं में तेजी से बदलते समाज का बहुत ही मार्मिक और संवेदनशील चित्रण दृष्टिगोचक रहा है। वर्तमान की महानगरीय सभ्यता में मनुष्य के अकेलेपन की व्यथा और उसका चित्रांकन कमलेश्वर की रचनाओं की विशेषता रही है।

----------X----------

कमलेश्वर ने अपने उपन्यासों में नारी की क्या सोच है और वह समाज में किस प्रकार से जीवन व्यतीत करना चाहिए उसके हर पक्ष का वर्णन किया गया है। समाज में नारी की क्या स्थिति है। समाज में उसे किस प्रकार की नजरों से देखा जाता है और समाज में नारी को रहने के लिए किस प्रकार से मजबूर करता है। ये सब वर्णन कमलेश्वर जी ने अपने उपन्यासों में किया।

यहाँ पर नारी मनोविज्ञान को चार प्रकार में बांटा गया है-

1. नारी मनोविज्ञान - सामाजिक पक्ष
2. नारी मनोविज्ञान - धार्मिक पक्ष
3. नारी मनोविज्ञान - राजनीतिक पक्ष
4. नारी मनोविज्ञान - आर्थिक पक्ष

नारी मनोविज्ञान: सामाजिक पक्ष:

डाक बंगला:

कमलेश्वर में इस उपन्यास में पूर्व दिप्ती पद्धति का प्रयोग किया है। इरा नामक युवती की आप बीती घटना को आत्मकथात्मक शैली में बहुत ही प्रभावी ढंग से प्रस्तुत किया है 'इरा' की कहानी एक ऐसी युवती की कहानी है, जिसने अनेक उतार-चढ़ाव देखे हैं। 'इरा' एक ऐसी युवती है जो आडु के डाक बंगले में ठहरी है। कश्मीर की यात्रा के दौरान वह डाक बंगले में तिलक और सौलंकी के साथ ठहरी है। इस उपन्यास में इरा के माध्यम से एक साधारण नारी की आन्तरिक एवं बाह्य संघर्ष को दर्शाया गया है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में नारी मनोविज्ञान के सामाजिक एवं आर्थिक पक्ष का वर्णन किया है।

इरा एक मध्यमवर्गीय परिवार की लड़की है। उसे बचपन से ही माता-पिता का प्यार नहीं मिला। माँ की मौत के बाद उसके पिता उसकी तरफ कोई ध्यान नहीं देते थे। कभी उसने अपनी बेटी की जरूरत को पूरा नहीं किया। पहली बार इरा को किसी व्यक्ति से प्यार होता है। उसका पे्रमी उसे अकेली छोड़कर चला गया। उसके बाद उसकी जिन्दगी में तीन पुरुष आते हैं। बतरा सौलंगी और डॉक्टर, इन तीनों ने इरा को अपने झूठे पे्रम जाल में फंसाया। बतरा, सौलंकी और डॉक्टर के साथ रहते हुए 'इरा' ने पहली जिन्दगी के बारे में कुछ नहीं सोचा वह हर बार नई जिन्दगी की शुरुआत करती रही।

इस प्रकार से 'इरा' के जीवन में तीन चार पुरुष आते हैं। पर कोई भी उसको अपनाने को तैयार नहीं था। इरा चाहती थी कि मेरा भी एक अच्छा पति हो, जो उसको

www.ignited.in

बहुत प्यार करता हो वह अपने लिए एक पति रूपी कवच को चाहती है, जो उसको नहीं मिल पाता। इरा प्यार की भूखी थी पहले उसे माता-पिता का प्यार नहीं मिल पाया, बाद में पति का प्यार भी न मिला।

वास्तव में इस उपन्यास में 'इरा' की काम भावनाओं को सेक्स के आधार पर मनोविज्ञान के सहारे विश्लेषित करने का प्रयास कमलेश्वर ने किया। 'इरा' ने जीवन भर में जो किया या भोगा, इससे वह इतनी उलझती गयी कि आस्था और आदर्श और अच्छाइयों के प्रति उसके मन में विश्वास नहीं रहा। आदमी के प्यार की प्यासी इरा को कभी भी आदमी मयस्सर नहीं हुआ है। उसे आदमी में एक भेड़िया नजर आता है। उसके जीवन में जो भी आता उसे छोड़कर चला जाता है। इसीलिए इरा कहती है कि हर लड़की को एक कवच चाहिए। चाहे वह पिता, पति का या भाई का हो। इस कवच के नीचे वह अच्छा बुरा समय गुजार सकती है। वह सोचती है कि जैसे नारी को पहनने के लिए कपड़े चाहिएं ऐसे ही उसको अपने जीवन में पति रूपी कवच चाहिए।

इस प्रकार से डाक बंगले में आर्थिक समस्या दूसरी समस्याओं का आधार लेकर उद्घाटित हुई है। इसके माध्यम से नारी जीवन की असहाय और दयनीय परिस्थिति को चित्रित किया है। इस प्रकार 'इरा' कहती है कि नारी दृष्टिकोण में परिवर्तन होना चाहिए। नारी को स्वतंत्र और स्वावलंबी और समर्थ होना चाहिए। वह कहती है कि नारी अबला नहीं है। इस प्रकार 'इरा' के माध्यम से नारी जीवन की करुण विडम्बना का वर्णन किया गया है। वह कहती है कि नारी में माँ और पत्नी बनने की, घर बसाने की नैसर्गिक कामना होती है। 'डाक बंगला' की इरा एक ऐसी नारी है जो जीवन पर भटकने बाद भी कहीं स्थायित्व नहीं पा सकी। जीवन की कोई मंजिल उसको नहीं मिली। वह कहती है कि मेरी जिन्दगी बगैर मंजिल के चलती रहती, रही है, मैं चिर पथिक हूँ। इस प्रकार इस का जीवन पुरुषों से टकराकर टूटता बिखरता गया। अब वह असुरक्षा व अस्थिरता में जीने को मजबूर हो। इस प्रकार लेखन ने इस उपन्यासों में भारतीय नारी की करुण स्थिति का बड़ा दर्दनाक-चित्र प्रस्तुत किया है।{1}

नारी मनोविज्ञान सामाजिक पक्ष:

'वही बात'

इस उपन्यास में घटनाएँ एक स्वाभाविक क्रम में घटती जाती है। इस उपन्यास में सफलता प्राप्त करने के मानवीय पद्धति का सफल निरुपण किया गया है। इस उपन्यास में नारी पात्र समीरा है। जहाँ पर समीरा का पति प्रशान्त जाता है। वह भी उसी के साथ चली जाती है। उसका पति प्रशान्त चीफ इंजीनियर है वह समीरा के साथ बम्बई से दूर एक पहाड़ी प्रवेश पर बांध बनाने की वजह से समीर प्रशासन अपने काम में इतना व्यस्त हो गया था कि वह समीरा को बिल्कुल टाइम नहीं दे पा रहा था, इसलिए परेशान रहने लगी थी। वह अकेली पड़ने लगी थी। उसका पति के बिना मन नहीं लगता थ, प्रशान्त से मिले अकेलेपन से तंग आकर समीरा ने नकुल से अपनापन प्राप्त कर लिया। नकुल प्रशान्त का दोस्त है। एक दिन समीरा ने स्पष्ट शब्दों में प्रशान्त से कह दिया कि वह नकुल की हो चुकी है। समीरा ने नकुल के साथ शादी करने अपना घर पुराना घर भी छोड़ दिया, क्योंकि समीरा को वहाँ उसका अतीत कचोट रहा था। अतः इस प्रकार से इस उपन्यास में नारी के सामाजिक पक्ष का वर्णन किया गया है कि समाज में पति पत्नी आपस में एक दूसरे के साथ नहीं रहते हैं। क्योंकि उसके पास समय का अभाव है। समाज में परिवारों में नारी के तलाक तथा पुनर्विवाह का कारण नारी का अकेलेपन भी एक प्रमुख कारण है।

उपन्यास में समीरा ने पति के समय न दे पाने के कारण पुनर्विवाह कर लिया, लेकिन वह दूसरा विवाह करने के बाद प्रशान्त को न भूल पायी। अतः भारतीय नारी का वह विचित्र मानसिक द्वन्द्व है। वह न तो रोमांटिक रह पा रही है और न ही यथार्थ को भुल पा रही है। समीरा प्रशान्त को छोड़कर नकुल के पास चली जाती है। लेकिन वह पूरी तरह से प्रशान्त को नहीं भुल पाती अतः यहाँ रोमांटिकता और यथार्थ के बीच की स्थिति समीरा के चरित्र द्वारा व्यक्त की गई है।{2}

नारी मनोविज्ञान: सामाजिक आर्थिक पक्ष:

आगामी अतीत:

कमलेश्वर ने आगामी अतीत उपन्यास में कस्बे की वेश्याओं की जिन्दगी अत्यन्त सुक्ष्मता एवं स्वाभाविकता से अंकित किया है कि उसके जीवन में आर्थिक संकट के

कारण कितनी कटुता आ गयी। चाँदनी के रूप में जिस नारी पात्र का चित्रण किया है। वह निश्चय ही प्रशंसनीय है। वैसे तो कमलेश्वर के सभी उपन्यासों में नारी की व्यथा अभाव और मानसिक असंतोष की अभिव्यक्ति मिली है किन्तु आगामी अतीत की चाँदनी को गढ़ने, उन्होंने अपनी प्रतिभा का परिचय दिया।

आगामी अतीत की चाँदनी आर्थिक कमजोरी के कारण वेश्या बनने पर मजबूर है। वह इतना घटिया काम अपना पेट भरने के लिए करती है। चाँदनी का यह कथन उसकी यथार्थ स्थिति को व्यक्त करती है। वह कहती है कि हम गरीबों के लिए प्रेम इश्क नाम की कोई चीज नहीं है। हम इश्क नहीं करते हैं जो दुसरे किसी हिन्दी उपन्यास में देखने को नहीं मिलता है। चाँदनी का अनूठा व्यक्तित्व सम्पूर्ण उपन्यास में छाया हुआ है। कमलेश्वर के इस उपन्यास में नारी मनोविज्ञान के आर्थिक पक्ष का वर्णन किया गया है। चाँदनी आर्थिक रूप से बहुत परेशान है। उसे अपने जीवन-यापन करने में काफी परेशानियों का सामना करना पड़ा। इसलिए वह बाद में वेश्या बनने पर मजबूर हो गयी है। समाज में वेश्याओं को कितनी बूरी दृष्टि से देखा जाता है। समाज में रहने की वह मजबूर है। चाँदनी कहती है कि पे्रम न तो अलोकिक आनन्द देने वाला है न शारीरिक बल्कि वह जीवन गुजारने का आर्थिक साधन बन गया है। वह कहती है कि हम वेश्याएं समाज में अपेक्षित और बुरी दृष्टि से देखी जाती है। वह कहती है कि हम जिस वर्ग के हैं, उस वर्ग की स्थिति क्षीण ही नहीं बल्कि दयनीय भी है वह कहती है अपने शरीर को मारकर जीवित रहने का प्रयास यह वर्ग कर रहा है, कमलेश्वर ने इस उपन्यास में वेश्याओं की समाज में क्या स्थिति है। उसका वर्णन किया गया है।{3}

नारी मनोविज्ञान: सामाजिक पक्ष:

सुबह दोपहर शाम:

कमलेश्वर के इस उपन्यास में आर्थिक तथा राजनीतिक परिवेश का चित्रण किया गया है। इस उपन्यास में पराधीन भारत की कहानी है। इस उपन्यास में दो नारी पात्र है। एक जसवन्त की दादी अम्मी तथा शान्ता। दादी जसवंत से कहती है-बेटा जसवंत तू अंगे्रजों की नौकरी मत कर दादी अंगे्रजों को पसंद नहीं करती थी। जसवंत को शहर में रेलवे में नौकरी मिली, दादी नहीं चाहती थी कि वह रेलवे में नौकरी करे, दादी कहती है कि बेटा अंगे्रजों की नौकरी करेगा।

हाँ दादी, दादी: बेटा, रोटी तो कुत्ता भी खाता है, जो टुकड़ा फैंक दो उसे ही खा लेगा, पर मनुष्य रोटी-रोटी में भेद करता है- तु रोटी का भेद भुल गया है। दादी माँ को लगता है कि जसवंत अंगे्रजों की गुलामी करने जा रहा है। दादी कहती है कि जसवन्त अंगे्रजों की गुलामी करने जा रहा है। दादी कहती है कि उसके दादा 1857 में राजा साहब को बचाते हुए शहीद हो गए थे। जसवंत की बुआ कलावती का पति भी अंगे्रजों का गुलाम बन गया था। तब से दादी ने कलावती से मुख मोड़ लिया था। दादी सोचती थी कि उसकी बेटी व दामाद ने गद्दारी की है। दादी ने घर में ऐलान किया कि कलावती अब कलावती नहीं वह कलंकवती है। एक माँ की अपनी ही बेटी के बारे में ऐसी सोच थी कि उसके घराने से उसका कोई लेना-देना नहीं पति की मृत्यु के दुःख से और बेटी के हाथ से निकल जाने पर दादी के हृदय में गाँठ पड़ गई थी दादी अंगे्रज हुकुमत से बदला लेना चाहती थी। क्योंकि उसका पति अंगे्रजों ने मारा था। दादी चाहती थी कि उसका बेटा अपने पिता की मौत का बदला लेगा। दादी को बेटे से बहुत आशाएं थी, लेकिन जब उसने रेलवे में नौकरी करने की ठान ली तो दादी का दिल टूट गया।

इस उपन्यास की दूसरी नारी पात्र शान्ता है, जो जसवन्त की बेटी है। जसवंत की बेटी शान्ता पर इस घटना का बहुत असर पड़ा। एक दिन दादी घर से चली गई बहुत खोजने के बाद उसका पता नहीं लगता था। शान्ता दादी के पास रहती है। जब दादी गुम हुई, शान्ता के मन में दादी के प्रति बहुत पे्रम था। वह दादी को छोड़कर शहर नहीं गई वह दादी की प्रतीक्षा में शहर नहीं गई। कुछ दिन बाद शान्ता की शादी प्रवीण से हो जाती है। प्रवीण का छोटा भाई क्रान्तिकारी दल का नेता था। पुलिस नवीन को ढूंढती हुई शादी समारोह में आ घुसी।

बारात की विदाई रेल द्वारा की गई थी शान्ता रेल में बैठी थी तभी एक बुर्के वाली औरत शान्ता के पास आकर बैठ गई शान्ता नवीन को पहचान गई थी। पुलिस नवीन के पीछे पड़ी थी, शान्ता ने नवीन को आशीर्वाद दिया और नवीन रेल से नीचे उतरने में सफल हो गया था। शान्ता इतनी साहसी औरत थ कि उसने अपने देवर नवीन को पुलिस से बचाया।

www.ignited.in

कुछ दिन बाद शान्ता के पति प्रवीन को पुलिस ने पकड़ लिया और नवीन के ठिकाने के बारे में पुछा तो प्रवीण ने सब कुछ बता दिया था। परन्तु शान्ता के साहस के सामने पुलिस कुछ न कर सकी।

शान्ता ने हिन्दुस्तानी सिपाहियों से कहा कि तुम बन्दुकें फेंक दो नहीं तो मैं अपने कपड़े उतार दूंगी, इतना सुनते ही सिपाहियों ने बन्दुकें फैंक दी और अंग्रेज सिपाही के ऊपर गोली दाग दी। इस प्रकार से शान्ता ने अपनी बहादुरी का परिचय दिया कि औरत को कभी किसी के सामने छोटा नहीं समझना चाहिए।वह कभी भी दुर्गा का रूप धारण कर सकती है।

इस प्रकार से कमलेश्वर ने इस उपन्यास में औरत की बहादुरी का परिचय दिया। शान्ता अपने देवर नवीन को अंग्रेजों से बचाने के लिए हरदम तैयार रहती थी। शान्ता का पति प्रवीण भी अपने भाई को बागी समझकर उससे नाता तोड़ लेता है लेकिन शान्ता नवीन से रिश्ता नहीं तोड़ती वह नवीन को अंग्रेजों से बचाने के लिए बन्दूक उठाकर सामना करती है। इस प्रकार से शान्ता में अपनी बहादुरी की परिचय दिया उसके अन्दर भी राष्ट्रप्रेम की भावना कुट-कुट कर भरी थी।{4}

नारी मनोविज्ञान: धार्मिक पक्ष:

उपन्यास 'लौटे हुए मुसाफिर' में कमलेश्वर ने नारी मनोविज्ञान के धार्मिक पक्ष का वर्णन किया है। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने नशीबन के माध्यम से देश विभाजन की घटना का वर्णन किया है। इस उपन्यास की नारी पात्र नशीबन एक मुस्लिम सम्प्रदाय से है। 'लौटे हुए मुसाफिर' में लेखक ने विभाजन की घटना के माध्यम से वास्तव में इन्सानी रिश्तों के मानवीय मानदण्डों की खोज की है। यह खोज सतार और सलमा दोनों में मिलती है। दोनों ही धार्मिक और साम्प्रदायित्व संकुचितता से परे मानवीय बोध के धरातल पर स्थित है। लेकिन मानवीयता की भावना नशीबन में मिलती है। नशीबन इस उपन्यास की मुख्य नारी पात्र है। जो सभी धर्मों की समान मानती है। वह किसी प्रकार की धार्मिक भावना में विश्वास नहीं करती है। पूरे उपन्यास में नशीबन मानवतावादी दृष्टिकोण का प्रतिनिधित्व करती है। नशीबन न हिन्दू है। न मुसलमान वह बस्ती में रहने वाली एक माँ है। इसीलिए बस्ती में रहने वाली के प्रति उसके प्रति ममत्व है। चाहे वह हिन्दू है या मुसलमान वह एक माँ का धर्म निभा रही है। जब देश का विभाजन हुआ तो बच्चन जो उसका पड़ौसी है। उनके बच्चों को वह अपने पास रख लेती है। लोग उससे पूछते हैं कि उसके पिता की मौत हो चुकी है और आप लोग चुपचाप उसके बच्चों को मुसलमान बना रहे हैं, यह जुर्म है। नशीबन से बच्चे मांगे जाते हैं। पर वह उन बच्चों को अनाथालय नहीं जाने देती है। नशीबन कहती है कि बच्चे किसी अनाथालय में नहीं जाएंगे। नशीबन कहती है कि बच्चों को मुसलमान बनाने की बात सोलह आने गलत है। वह कहती है कि बच्चों का बाप जिन्दा है। जब आएगा तब ले जाएगा।

उसका यह ममत्व साम्प्रदायिकता की संकुचितता से ऊपर मानवता के धरातल पर स्थित है। नशीबन के लिंग, धर्म, सम्प्रदाय रंग जाति आदि बाहरी पहचानों का कोई महत्त्व नहीं है, वह साई से कहती है। साई असल बात यह है कि बच्चे तुम्हारी आँखों में खटक रहे हैं। मेरे लिए धर्म-कर्म का सवाल नहीं है। सीखी बात यह है कि मुझसे इन बच्चों को बिलखता हुए नहीं देखा जाता। इसीलिए मैं इन बच्चों को अपने पास ले आई। कल को इन बच्चों का बाप आएगा तो ले जाएगा। उसके मन में मानवता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

मनोविज्ञान की दृष्टि से नशीबन के अंदर छुपे ममत्व एवं इन्सानी रिश्तों के महत्त्व को दर्शाया गया है। बच्चों के प्रति उसके चेहरे पर आत्मीयता उमड़ जाती है। इस प्रकार नशीबन एक सामाजिक नारी है। उसके अंदर मातृत्व एवं स्वाभिमान की भावना कूट-कूट कर भरी हुई हैं। वह साम्प्रदायिक भावना में विश्वास नहीं करती है। वह इन्सानी रिश्तों की कदर करती है। वह हिन्दू है, न मुसलमान वह सबसे पहले एक माँ है।

इस उपन्यास में नशीबन के ममतामयी नारी के दर्शन उस समय देखने को मिलते हैं। जब वह देश विभाजन के बाद अपने हिन्दू पड़ौसी बच्चन सिंह के बच्चों और उनकी मृत्यु के बाद अनाथालय में जाने से मना कर देती है और उनकी अपने बच्चों जितना प्यार देती है। यहाँ हमें एक करुणामयी व ममतामयी नारी के दर्शन होते हैं।

इस प्रकार नशीबन धार्मिक स्कीर्णता से दूर है। वह हिन्दू-मुस्लिम में भेदभाव नहीं करती है। इस प्रकार हमें इसमें धार्मिक मनोविज्ञान के दर्शन होते हैं।{5}

नारी मनोविज्ञान: राजनीतिक पक्ष:

काली आँधी:

कमलेश्वर के 'काली आँधी' उपन्यास की कथा व्यक्तिगत और राजनीतिक स्तर पर चलती है। 'काली आँधी' एक ओर असफल दाम्पत्य की करुण कहानी है तो दूसरी ओर सम्पूर्ण देश में व्याप्त छल, कपट और षड़यन्त्र की करुण कहानी है।

उस उपन्यास की नायिका मालती है, उसका प्रभावी व्यक्तित्व सम्पूर्ण रचना में छाया हुआ है। मालती राजनीतिक में प्रवेश करती है। उसका प्रवेश ही उसकी सबसे बड़ी सफलता है। मालती राजनीतिक में प्रवेश करने के बाद इतनी व्यस्त हो जाती है कि अपने परिवार की तरफ ध्यान नहीं देती है। मालती के पति जग्गी बाबू तो राजनीतिक से बहुत दूर है। मालती के स्वभाव के विपरीत जग्गीबाबू है, जिन्हें न राजनीति से लगाव है न झूठी प्रतिष्ठा से। मालती के ऊपर राजनीति का नशा कुछ ऐसे हावी हो जाता है कि वह पति व बेटी की परवाह ही नहीं करती। ताज्जुब यही है कि पति को जीतने की बात कभी उसके मन में नहीं आई। मालती किस प्रकार की नारी है जो अपने पति की बिल्कुल परवाह नहीं करती। मालती को राजनीति की इतनी भूख है कि वह अपनी बेटी लिल्ली को भी भूल जाती है। राजनीति में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त करने वाली मालती अपने पारिवारिक जीवन में असफल हो जाती है। सामाजिक, यश, प्रतिष्ठा और कीर्ति के हवस में उसे अपने परिवार से ही तोड़ दिया। उसे अपनी बेटी लिल्ली से भी अलग होना पड़ा। बेटी के सन्दर्भ में वह अपनी बेटी लिल्ली से भी बात नहीं करती थी। राजनीति की भूख ने उसको इस कदर अन्धा बना दिया कि वह अपने पारिवारिक दायित्व को भी भूला दिया। वह सता की चाह अपनी सारी शक्ति लगा देती है। उसकी सता आकांक्षा राजनीति क्षेत्र से सम्बन्धित है। जहाँ वह सफलता के लिए सिर्फ जनता के स्वप्नों को ही अपनी व्यक्तिगत संसार को भी दांव पर लगा देती है। वह पहली ही बार चुनाव में सफलता प्राप्त करना चाहती है। वह किसी भी कीमत पर सफलता प्राप्त करनी चाहती थी। वह अपने आप को हर स्थिति में ऊपर देखना चाहती थी। वह राजनीति जनसेवा के बहाने व्यक्तिगत सता को स्थापित करना चाहती है, वह सफलता के लिए अपने परिवार को क्षत-विक्षत अवस्था में छोड़ देती है। नारी, पत्नी और माँ के रूप में वह अपने आप को खत्म कर देती है। दूसरी और यह करुण स्थिति है कि जनता को दिए गए वचन, जनसेवा, आदर्श शासन व्यवस्था और सुख शान्ति की स्थापना हुई आदि में से किसी के प्रति वह ईमानदार नहीं थी।

मालती की सता प्राप्ति और सफलता न केवल उसे घर से दूर करती है। बल्कि उसके पति और बेटी की जिन्दगी को लहुलुहान कर देती है। वह जैसे-जैसे सफलता की सीढ़ियाँ चढ़ती जाती है। उसका व्यक्तिगत जीवन के प्रति लगाव कम हो जाता है।

ऐसी बात नहीं थी कि पति के प्रति प्यार नहीं था लेकिन वह चाहती थी कि उसकी सुविधा के अनुसार पति खुद को ढाल ले, इस प्रकार व्यक्तिगत जीवन की विडम्बना के साथ-साथ इस उपन्यास में स्वाधीनता के पश्चात् देश में व्याप्त राजनीति के अतिरिक्त पहलुओं को निर्ममता से उद्घाटित करता है।{6}

नारी मनोविज्ञान: आर्थिक पक्ष:

'तीसरा आदमी'

कमलेश्वर का यह उपन्यास सरल एवं सहज शैली में लिखा गया है। मध्यवर्गीय दाम्पत्य में एक तीसरे आदमी के आने से आपसी सम्बन्धों में विखराव आ जाता है। इसका प्रभावी चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। आत्मकथा शैली और सांकेतिक भाषा में लिख गया। यह उपन्यास कस्बाई और महानगरीय जिन्दगी की एक जुड़ती हुई कड़ी के रूप में सामने आता है। पति पत्नी के सम्बन्ध कुछ इस प्रकार के होते हैं कि उनके बीच तीसरा आदमी से जो अन्तर निर्माण हो जाता है। वे उसे सहन नहीं कर पाते। 'तीसरा आदमी' के रूप में यह उपन्यास वर्तमान आर्थिक और सामाजिक परिस्थितियों के आधार पर मध्यवर्गीय परिवार का चित्रण है। कमलेश्वर के इस उपन्यास की पात्र चित्रा यह सोचती है। मेरा पति मेरी हर छोटी-बड़ी आवश्यकताओं को पूरा करें। वे शादी के बाद नया घर बनाना चाहती थी। चित्रा चाहती कि मेरा घर सबसे सुन्दर हो मेरा अच्छा प्रभावशाली व्यक्तित्व हो। लेकिन इन कोशिशों में दोनों टूटते बिखरते गये। चित्रा चाहती थी की मेरा परिवार स्वतंत्र होना चाहिए, लेकिन चित्रा अपने परिवार को जोड़कर नहीं रख सकी। चित्रा अपने पति के साथ बहुत झगड़ा करती है। दोनों में मनमुटाव रहने लगता है। चित्रा अपने और अपने पति के

www.ignited.in

बीच तीसरा व्यक्ति महसूस करती है। चित्रा की आकांक्षाएँ इतनी बढ़ गयी हैं कि उसका पति पूरा नहीं कर पा रहा था। चित्रा अपने पति के व्यक्तित्व से प्रसन्न नहीं थी, तीसरे आदमी की धारणा उसके मन में बैठ गयी। चित्रा अपने पति के व्यक्तित्व से प्रसन्न कभी न रही। चित्रा पति से कम पैसे से ज्यादा प्यार करती थी। पैसा ही उसके लिए सब कुछ था। नारी मनोविज्ञान की दृष्टि से चित्रा ज्यादा पैसे से प्यार करती थी। एक औरत पैसे के लिए इतना गिर सकती है। आर्थिक संकट जो पति पत्नी के बीच भावनात्मक दूरियाँ पैदा करती है। फिर धीरे-धीरे शारीरिक दूरियाँ। अन्त में वह बिन्दू भी आता है। जब चित्रा अपने पति की शक्ल तक नहीं देखती है। चित्रा आर्थिक संकट के कारण अपने पति से दूर हो जाती है।{7}

'समुद्र में खोया हुआ आदमी':

समुद्र में खोया हुआ आदमी उपन्यास में कमलेश्वर ने एक मध्यवर्गीय परिवार की आर्थिक स्थिति का वर्णन किया है। गाँव से शहर में जाकर बसे श्यामलाल के परिवार की आर्थिक स्थिति का चित्रण किया है। इस उपन्यास में कमलेश्वर ने नारी -मनोविज्ञान के सामाजिक पक्ष का वर्णन किया है। इस उपन्यास की नारी पात्र रम्मी है तथा उसकी लड़की तारा है। दोनों का वर्णन इस उपन्यास में किया गया है। तारा के पिता श्यामलाल की पैंशन आती है, लेकिन थोड़ी सी पैंशन में उसकी घर की आवश्यकता पूरी नहीं होती है। श्यामलाल की पत्नी रम्मी अपनी बेटी तारा को हरवंश नामक व्यक्ति के यहाँ नौकरी करने के लिए भेज देती है। हरवंश तारा की मजबूरी का फायदा उठाता है। वह तारा को गर्भवती कर देता है। जब उसकी बेटी तारा गर्भवती हो गयी है तो वह अपने पड़ोसन में तारा का गर्भ गिरवाने की बात कहती है। जब पड़ोसन को इस बात का पता चलता है, कि उसकी बेटी तारा गर्भवती हो गई है, तो वह तारा का गर्भ गिरवाने को कहती है। पड़ोसन की इस बात को सुनकर रम्मी के मन की शान्ति मिलती है। यह स्थिति सामान्य रूप से नगर और महानगर में आम हो गई है, क्योंकि सामाजिक संदर्भ में नैतिक मान्यताएँ बदलती जा रही हैं, और इसी यथार्थ का चित्रण इस उपन्यास में किया गया है। तारा की माँ रम्मी तारा के गर्भवती होने की बात को सामान्य मानती है। वह इस बात से बिल्कुल भी दुःखी नहीं होती है। रम्मी अपने बेटी तारा की शादी हरवंश नामक व्यक्ति से कर देती है। इस प्रकार कमलेश्वर ने नारी मनोविज्ञान के आर्थिक पक्ष का वर्णन किया है। नारी की बदलती सोच के कारण वह समाज में रहकर हर प्रकार का कार्य कर सकती है। कमलेश्वर ने इस उपन्यास में मध्यवर्गीय परिवार के टूटने की कथा का वर्णन किया है। आर्थिक स्थिति कमजोर होने के कारण रम्मी की बेटी तारा को हरवंश नामक व्यक्ति किस प्रकार अपनी अर्थव्यवस्था खोकर सभ्यता की भीड़ के एक महत्वहीन अंश रूपान्तरित होती जा रही है।{8}

संदर्भ सूची:

1. कमलेश्वर, संवेदना और शिल्प, पृ. 114
2. वही, पृ. 132
3. वही, पृ. 136
4. वही, पृ. 143
5. वही, पृ. 110
6. वही, पृ. 126
7. वही, पृ. 119
8. वही, पृ. 122

Corresponding Author

Narender Kumar*

Research Scholar of OPJS University, Churu, Rajasthan